The Sameeksha (समीक्षा) Global: A Multidisciplinary Journal in Hindi
Vol. 3, Issue 1 - 2019

ग्रामीण भारत का नया चेहरा

केशव पटेल*

ग्बोलाइजेशन के दौर बदलते भारत के स्वरूप ग्रामीण भारत को भी अपने रंग में रगना शुरू कर दिया है । इंटरनेट के आने के बाद तो संचार क्रांति ने तो बदलाव की गति को और भी तीव्र कर दिया है। अपनी पारंपरिक शिक्षा पद्धति के पुराने ढांचे को तोडकर अब ग्रामीण शिक्षा ने एक नई अंगडाई ली। गांवों में बसने वाला भारत अब ई-क्रांति का अग्र दूत बनने की राह पर है। डिजिटलाईजेशन के इस दौर में भारत सरकार ने भी शिक्षा-व्यवस्था को पूरी तरह से डिजिटलाइज्ड करने की योजना बनाई है। (Patel, 2019)और इसके अंतर्गत प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षा तक की पूरी शिक्षा व्यवस्था को भी अपने पारंपरिक दौर से निकालकर डिजिटल किया जा रहा है। इसके लिए सरकार कई तरह की योजनाओं को क्रियांवित कर रही है। किंतु वर्तमान समय में भारत की ग्रामीण शिक्षा के लिए कई ऐसे मुद्दे हैं जैसे संसाधनों की कमी, प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी, लैंगिक असमानता, छात्रों का स्कूलों के प्रति कम रुझान, बीच में ही स्कूल छोडना, जिनकी वजह से ग्रामीण शिक्षा के Re-imagining में तमाम मुश्किलें अभी भी हैं। इन तमाम मुश्किलों के बीच ई-लर्निंग एक ऐसी व्यवस्था है जिसके तहत ग्रामीण शिक्षा के मध्य इस गेप को कम किया जा सकता है। ई-लर्निग को सीधे तौर पर कहा जाए तो “तकनीकी माध्यम से प्रभावकारी शिक्षा” और इस प्रभावकारी तकनीकी शिक्षा के माध्यम से ही ग्रामीण भारत के अंधेरे कोने को रोशन किया जा सकता है। (The Commission on Technology and Adult Learning (2001) defines e-learning as “Instructional content or learning experiences delivered or enabled by electronic technology”.)

“E-Learning - “E-learning most often means an approach to facilitate and enhance learning by means of personal computers, CD-ROMs, audio visual aids and the Internet. This includes email, discussion forums, and collaborative software”

ई-लर्निंग की प्रक्रियाओं में, कंप्यूटर-, वर्चुअल, डिजीटल कक्षाएं शामिल हैं। जिनमें सेलबस का वितरण इंटरनेट, इंट्रानेट/ एक्स्ट्रानेट, ऑडियो या वीडियो टेप, उपग्रह टीवी और सीडी-रोम (CD-ROM) के माध्यम से किया जाता है और इनका पस्तुतिकरण पाठ, छवि, एनीमेशन, स्ट्रीमिंग वीडियो और ऑडियो के माध्यम से किया जाता है। ई-लर्निंग सीबीटी (Computer based teaching CBT), आईबीटी (IBT-इंटरनेट-आधारित प्रशिक्षा) या डब्ल्यूबीटी (WBT-वेब-आधारित प्रशिक्षा) के रूप में जाना जाता है।

ई-लर्निंग की दिशा में सार्थक कदम

ई-लर्निंग का सबसे पहला प्रयोग वर्ष 1960 में अमेरिका में देखा गया था। जहां शिकागो में यूनिवर्सिटी ऑफ लीनियोस में क्लासरूम के सभी कंप्यूटर्स को एक सर्वर से कनेक्ट किया गया था। सभी छात्र उस कंप्यूटर को एक्सेस कर लेक्चर सुन सकते थे। यह प्रयोग बहुत ही कामयाब रहा और इसके बाद इस तरह के प्रयोग अक्सर देखने को मिले। भारत में दूरदर्शन द्वारा यूजीसी कार्यक्रम देश में ई-लर्निंग की शुरूआत मानी जाती है। ई-लर्निंग की दिशा में सबसे प्रभावसाली कदम प्रो. सुगादा मित्रा का माना जाता है जिन्होंने "Build a School in the Cloud" की तर्ज पर 26 January 1999, को

---

*अनुसंधान विद्वान, महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट।

Correspondence E-mail Id: editor@eurekajournals.com

ISSN: 2581-401X

अपनी टीम के साथ मिलकर "hole in the wall" प्रोजेक्ट पर दिल्ली के कालकाजी पर काम करना शुरू किया। कालकाजी झुग्गियों में रह बच्चों को कंप्यूटर सिखाने के लिए प्रो मित्रा ने यहां बिना किसी माउस के झुग्गी को अलग करने वाली दीवार पर छेद कर कंप्यूटर स्क्रीन लगाये और बाद में उसके बेहतरीन परिणाम सामने आये जिनमें अनपढ़ बच्चों ने कुछ ही समय में कंप्यूटर चलाना सीख लिया। वर्तमान समय में CSR (Corporate social responsibility) आधार पर देश में ई लर्निंग के प्रयास किये जा रहे हैं कई समूह **जैसे** HP, Cognizant, Azim Premji Foundation, HCL, Cisco, स्वयं आगे आकर देश में ई लर्निंग के प्रयासरत हैं। एचपी वर्ष 2011 से ही ई-लर्निंग के लिए भारत में एचपी लैब इन बॉक्स की सेवा मुहैया करा रहा है। कंपनी नेशनल काउंसिल ऑफ एजूकेशन रिसर्च एंड ट्रेनिंग (एनसीईआरटी) के साथ मिलकर तत्काल कक्षा नाम से ई-लर्निंग कार्यक्रम चला रही है। इसके तहत भारत के ग्रामीण और दूर दराज के इलाकों में मोबाइल के माध्यम से शिक्षा मुहैया कराई जा रही है। इसी प्रयास को और तेज करते हुए कंपनी ने हाल में लिक्विड ई-लर्निंग सर्विस के साथ समझौता किया है। एचपी लैब इन बॉक्स इसके तहत लिक्विड बाइलिंगुअल साफ्टवेयर उपलब्ध होगा। जहां लिक्विड साफ्टवेयर के माध्यम से प्रशिक्षण और प्रशिक्षकों के लिए कंटेंट मुहैया कराएगा। इस क्षेत्र में एचसीएल भी पीछे नहीं है कंपनी ने MY EDU WORLD सेवा शुरू की है जहां KG CLASS से लेकर HIGHER CLASS तक की पाठ्य सामग्री के कंटेंट DIGITAL FORMATE में उपलब्ध कराए गये हैं। Indian Institute of Management, Ahmadabad भी अपने प्रोजेक्ट 'Educational Innovations Bank' की शुरूआत की है जिसके अंतर्गत सरकारी स्कूल के बच्चों को एक बेहतर और गुणवत्ता युक्त शिक्षा देना प्राथमिकता है (CREATIVITYATGRASSROOTS, 2013)। भारत सरकार की महत्वाकांक्षी Digital India योजना जिसका तकरीबन बजट Rs 1,13,000 है इसका प्रमुख उद्देश्य भारत को डिजिटल सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने की दृष्टि से है।

नेशनल फाइबर ऑप्टिलक नेटवर्क (NOFN)

Ambitious National Optical Fibre Network (NOFN) भारत सरकार की एक अन्य महत्वकांक्षी योजना है जिसके माध्यम से सरकार के डिजिटल इंडिया कैंपेन को आधारभूत ढांचा मुहैया कराय जायेगा।

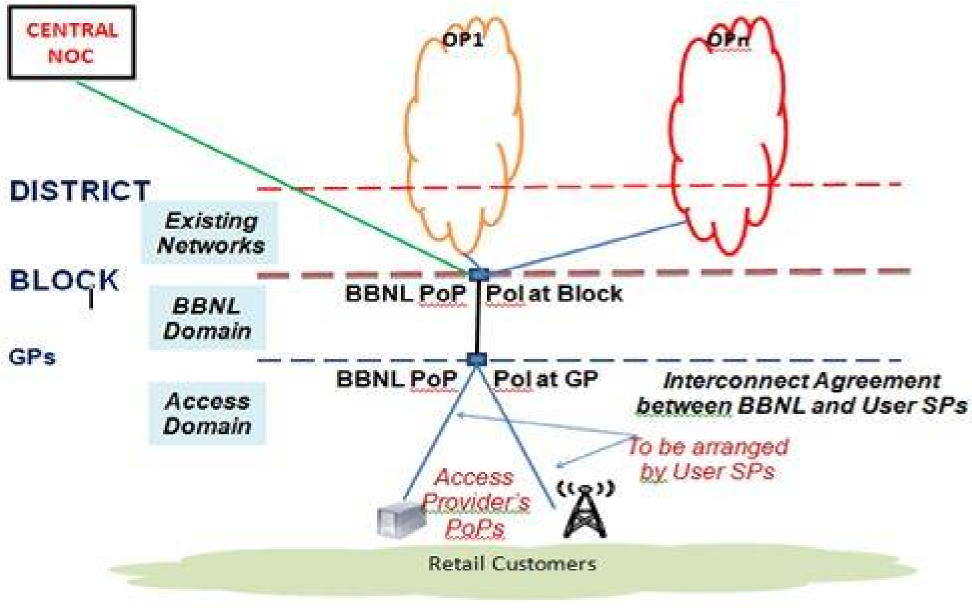
CENTRAL NOC
OP1
OPn
DISTRICT
Existing Networks
BLOCK
BBNL Domain
GPs
Access Domain
BBNL PoP
PoI at Block
BBNL PoP
PoI at GP
Interconnect Agreement between BBNL and User SPs
To be arranged by User SPs
Access Provider's PoPs
Retail Customers

(Source -NOFN –Govt. Of India), (Source –Digialindia.Gov)

NOFN जिसका मुख्य उद्देश देश में ब्रांडबेंड की गति को बढाना और उन क्षेत्रों में इंटरनेट और मोबाइल ब्रांडबेंट को तेज गति से पहुंचाना है जहां पर इसकी पहुंच अभी सीमित मात्रा में हैं ताकि ई लर्निंग को प्रभावशाली तरीके दूर दराज जगहों पर आसानी से पहुंच बनायी जा सके।

इसके तहत पूरे नेटवर्क को तीन स्तरों में बांटा गया है जिनमें Digital Content , Fully Technology Plateform, और Infrructure शामिल हैं।

देश में ई लर्निंग के समक्ष चुनौतियां

देश में ब्रॉडबैंड और इन्टरनेट की गति तमाम प्रयासों के बाद भी चिंता जनक बनी हुई है। इंटरनेट की पहुंच और स्पीड को प्रभावी करने के लिए डिजिटल इंडिया के तहत वर्ष 2020 तक देशभर में 60 करोड़ ब्रॉडबैंड कनेक्शन और ग्रामीण क्षेत्रों में 100 फीसदी टेली डेंसिटी का लक्ष्य निर्धारित किया गया है भारत में प्रत्येक टेलिकॉम ऑपरेटर पर औसतन 28 मेगाहर्ट्ज स्पेक्ट्रम है, जबकि यहीं हिस्सेदारी 117, चीन में 153 और अमेरिका में 136 मेगाहर्ट्ज है. इस समय भारत प्रत्येक दस लाख ग्राहकों के ऊपर उपलब्ध स्पेक्ट्रम मात्र 0.1 मेगाहर्ट्ज है। इसके कारण कंपनियों के पास स्पेक्ट्रम की कमी के कारण वॉयस कॉलिंग और डाटा ट्रांसफरमेशन में समस्याएं आती हैं, रेडियो फ्रीक्वेंसी में डेटा यातायात जिस तेजी से बढ़ रहा, अनुमान की मानें तो 2017 तक विश्व को 11 एक्साबाइट डाटा हर महीने, मोबाइल नेटवर्क के माध्यम से स्थानांतरित करने की आवश्यकता होगी।

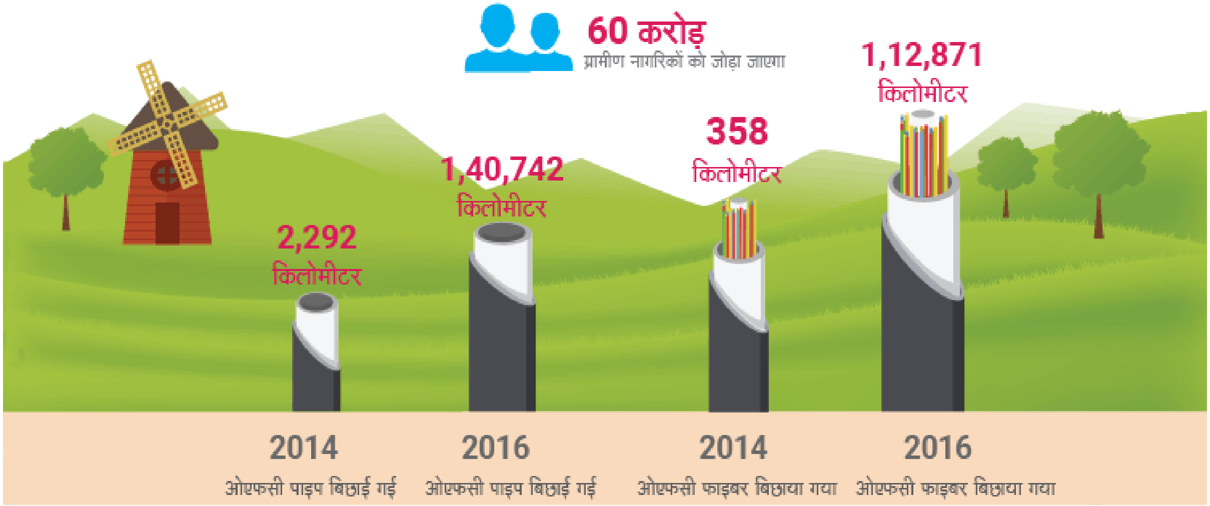

निष्कर्ष

जैसे मानवी सभ्यता विकसित होती गई है वैसे वैसे ही तकनीक ने भी प्रगति की है नव तकनीक-नवयुग में प्रवेश का माध्यम रही, कागज पर छपने वाले अख़बार से प्रिटिंग प्रेस होते हुए न्यू मीडिया के वर्तमान समय तक। तकनीक के साथ विकसित होती सभ्यताओं में प्रगति के अवसर हमेशा से मौजूद रहें हैं। इस बात से कतई भी इनकार नहीं किया जा सकता कि डिजिटल इंडिया के बढते प्रसार प्रचार के चलते ई लर्निंग के क्षेत्र में भी व्यापक परिवर्तन आयेगा। 5.5 इंच की इस ग्लोबल दुनिया में ई लर्निंग के माध्यम से अशिक्षाएक दिवास्वप्न मात्र बनकर रह जाये तो कोई अचरज नहीं।

संदर्भ सूची

[1]. Creativity at grass Roots. (2013, 10 08). The Education Innovation Bank-Teachers as Transformers. Retrieved from creativityatgrassroots.wordpress.com.

[2]. Patel, K. (2019, 05 31). Role of ICT and New Media in Bringing about a Change in Teacher's Approach to Schooling. Researcher's Voice, 8(1), 17-24. doi: 10.13140/ RG.2.2.12067.50726.